



Prsaant jain



Sona

Model: Horoscope-Matching

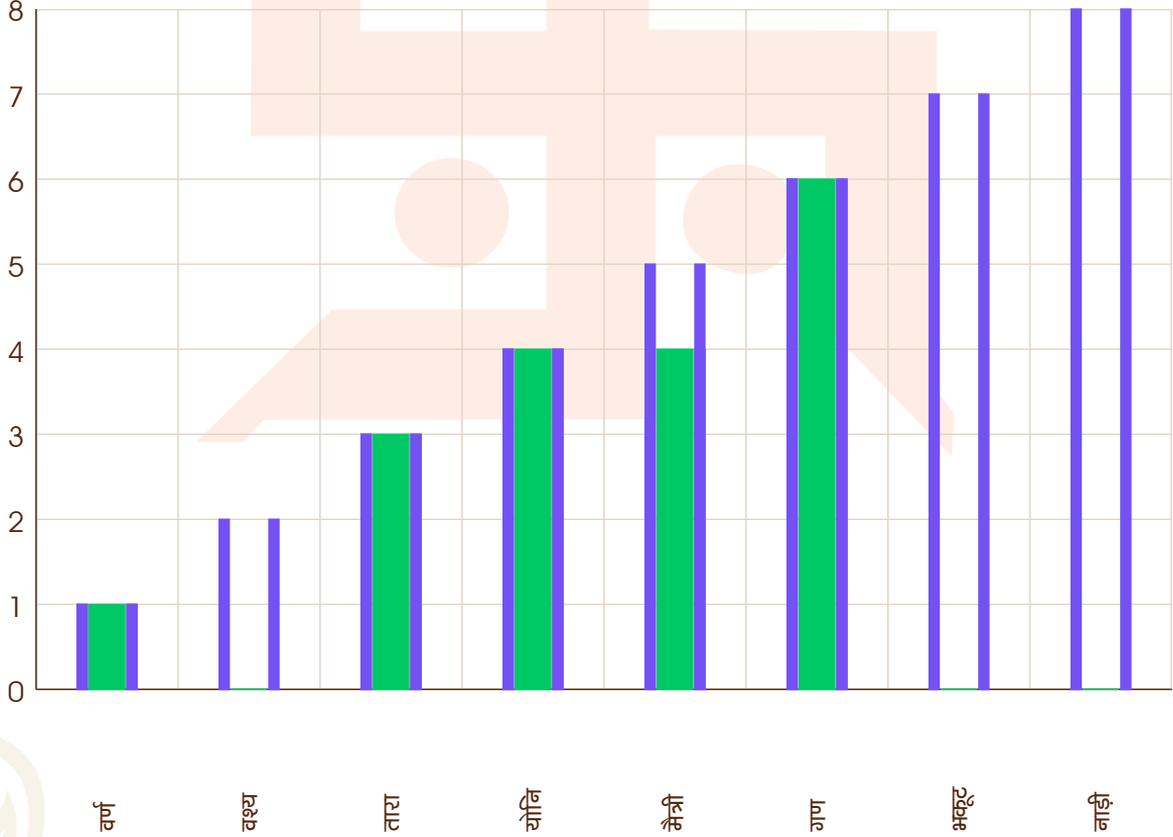
Order No: 121013401

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
6-07/06/1995 :	जन्म तिथि	: 12/01/1996
मंगल-बुधवार :	दिन	: शुक्रवार
घंटे 05:15:00 :	जन्म समय	: 08:55:00 घंटे
घटी 59:26:28 :	जन्म समय(घटी)	: 04:29:12 घटी
India :	देश	: India
Shivpuri :	स्थान	: Gwalior
25:26:00 उत्तर :	अक्षांश	: 26:12:00 उत्तर
77:39:00 पूर्व :	रेखांश	: 78:09:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:24 :	स्थानिक संस्कार	: -00:17:24 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
05:28:24 :	सूर्योदय	: 07:06:49
19:08:05 :	सूर्यास्त	: 17:44:15
23:47:45 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:48:13
वृष :	लग्न	: मकर
शुक्र :	लग्न लग्नाधिपति	: शनि
सिंह :	राशि	: कन्या
सूर्य :	राशि-स्वामी	: बुध
उ०फाल्गुनी :	नक्षत्र	: उ०फाल्गुनी
सूर्य :	नक्षत्र स्वामी	: सूर्य
1 :	चरण	: 4
सिद्धि :	योग	: शोभन
बालव :	करण	: वणिज
टे-टेकचंद :	जन्म नामाक्षर	: पी-पिंगला
मिथुन :	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: मकर
क्षत्रिय :	वर्ण	: वैश्य
वनचर :	वश्य	: मानव
गौ :	योनि	: गौ
मनुष्य :	गण	: मनुष्य
आद्य :	नाड़ी	: आद्य
श्वान :	वर्ग	: मूषक

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	मानव	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गौ	गौ	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	बुध	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	कन्या	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाडी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	18.00		

कुल : 18 / 36



Pulak Sagarm

T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।
नाड़ी दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एक है तथा चरण भिन्न-2 है।
क्षेदज रंपद का वर्ग श्वान है तथा वैदं का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क्षेदज रंपद और वैदं का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

क्षेदज रंपद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र क्षेदज रंपद कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

वैदं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुण्डली में सप्तम भाव में कर्क राशि तथा लग्न में मकर राशि का मंगल हो तब मंगली दोष समाप्त समझना चाहिए।

क्योंकि मंगल वैदं कि कुण्डली में प्रथम भाव में मकर राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।**

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल वैदं कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**त्रिषट् एकादशे राहु त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।**

वर या कन्या की कुण्डली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुण्डली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

Pulak Sagarm

T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

क्योंकि राहु च्छेदज रंपद कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

च्छेदज रंपद तथा वदं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम है।



Pulak Sagarm

T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

चतुर्दश रंजित का वर्ण क्षत्रिय तथा वैदं का वर्ण वैश्य है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववशैवदं आज्ञाकारी, सेवा करने वाली तथा विश्वासपात्र होगी। साथ ही वैदं की हमेशा कम खर्च करके परिवार के लिए पैसे बचाने की आदत रहेगी ताकि जिससे ये पैसे भविष्य में काम आ सकें।

वश्य

चतुर्दश रंजित का वश्य वनचर है एवं वैदं का वश्य द्विपद (मनुष्य) है। जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। वनचर मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु होता है तथा जब भी मौका मिलता है वनचर मनुष्य पर आक्रमण कर उसे मारकर खा जाता है। इसी प्रकार वैवाहिक संबंधों में भी दोनों एक-दूसरे के लिए शत्रु साबित होंगे। चतुर्दश रंजित और वैदं के बीच अक्सर आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलता रहेगा। दोनों समय समय पर एक दूसरे का अपमान करते रहेंगे। एक दूसरे की परवाह भी कम ही करेंगे। दोनों अक्सर लड़ाई-झगड़ा, एक-दूसरे पर वार एवं अपमान करते रहेंगे। जिससे परिवार की सुख-शांति भंग हो सकती है। ऐसी स्थिति में संतान भी अति क्रोधी, असामाजिक एवं अमानवीय व्यवहार करने वाले हो सकती है।

तारा

चतुर्दश रंजित की तारा जन्म तथा वैदं की तारा भी जन्म है। अतः समान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, सहयोग आपसी विश्वास तथा समझदारी की भावना बनी रहेगी। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वास पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण सक्षमता से मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी संतान बुद्धिमान, कर्तव्यपरायण तथा सफल होगी।

योनि

चतुर्दश रंजित की योनि गौ है तथा वैदं की योनि भी गौ है। अर्थात् दोनों की योनि समान ही है। दोनों योनि के बीच परस्पर मित्रता का संबंध है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के बीच अगाध प्रेम होगा। दोनों हमेशा एक दूसरे को समय-समय पर अपना सहयोग देते रहेंगे जिससे इनका पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन अत्यंत सौहार्द एवं प्रेमपूर्वक बीतेगा। सोच एवं समझदारी में समानता होने के कारण परस्पर वैचारिक मतभेद नहीं रहेंगे। इस प्रकार आपसी विश्वास रहने के कारण आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। आप दोनों पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन में शांति का अनुभव करेंगे। मन में हर्षोल्लास की भावना बनी रहेगी। साथ ही परिवार में सौहार्दपूर्ण वातावरण रहेगा। धन का आगमन समय-समय पर होता रहेगा। जिसके कारण आप सुखी पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन व्यतीत करेंगे। दोनों आपसी समझबूझ के साथ जीवन में आने वाली किसी भी समस्या का समधान

Pulak Sagarm

T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

शीघ्र ही निकाल पाने में सझम होंगे। जिसके कारण इनका पारिवारिक जीवन अत्याधिक समृद्धिशाली रहेगा। इस प्रकार इनका वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन सुखी होगा एवं प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में च्तेदज रंपद का राशि स्वामी वंद के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि वंद का राशिस्वामी च्तेदज रंपद के राशिस्वामी के साथ मित्रता का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए सम हों किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को अपना मित्र मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

च्तेदज रंपद का गण मनुष्य तथा वंद का गण भी मनुष्य ही है। अर्थात् दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के स्वभाव एक जैसे होंगे। दोनों भौतिक सुखों के आकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान, व्यावहारिक तथा मिलनसार रहेंगे। तथा साथ मिलकर अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

भकूट

च्तेदज रंपद से वंद की राशि द्वितीय भाव में स्थित है तथा वंद से च्तेदज रंपद की राशि द्वादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके कारण च्तेदज रंपद गुस्सैल एवं लड़ाकू स्वभाव के हो सकते हैं। साथ ही शारीरिक रूप से कमजोर तथा अपव्ययी होंगे। वंद समझौतावादी, सौम्य एवं दयालु प्रवृत्ति की होंगी तथा अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को आसानी से बखूबी निभाती रहेंगी तथा बचत भी करती रहेगी। दूसरी ओर च्तेदज रंपद शाहखर्च, लापरवाह एवं अय्याशी में पैसे बर्बाद करने वाले हो सकते हैं।

नाड़ी

च्तेदज रंपद की नाड़ी आद्य है तथा वंद की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात् दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात् यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। च्तेदज रंपद एवं वंद दोनों की आद्य नाड़ी होने से, दम्पत्ति वात से संबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो सकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसे दम्पत्ति जिनकी नाड़ी एक ही हों, उनकी संतानें रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में संकेन्द्रण की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो सकते हैं अथवा बचपन या किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो सकती है।

Pulak Sagarm

T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

मेलापक फलित

स्वभाव

चैदज रंपद की जन्म राशि अग्नि तत्व युक्त सिंह तथा वैदं की राशि भूमितत्व युक्त कन्या है। पृथ्वी एवं अग्नि तत्व में नैसर्गिक विषमता होने के कारण चैदज रंपद और वैदं की स्वभाव में असमानता रहेगी फलतः परस्पर संबंधों में मधुरता का अभाव होगा तथा मतभेद एवं विरोध का भाव बना रहेगा। अतः मिलान विशेष अच्छा नहीं रहेगा।

चैदज रंपद की जन्म राशि का स्वामी सूर्य तथा वैदं की राशि का स्वामी बुध परस्पर मित्र एवं सम राशियों में स्थित है। इसके प्रभाव से आप यत्नपूर्वक स्वभावगत मतभेदों को दूर करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। इससे उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा किंचित मात्रा में सुख के क्षण प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। ये दोनों एक दूसरे के प्रति समर्पण सम्मान एवं सहयोग के भाव को प्रदर्शित करेंगे।

चैदज रंपद और वैदं की राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती है शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना गया है। इसके प्रभाव से चैदज रंपद और वैदं के मध्य अनावश्यक मतभेद एवं विरोध का भाव उत्पन्न होगा तथा यदा कदा चैदज रंपद के उग्रता के कारण पारिवारिक शांति भंग होगी। साथ ही चैदज रंपद और वैदं दोनों के मन में श्रेष्ठता की भावना का प्रादुर्भाव होगा फलतः संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। यदि चैदज रंपद और वैदं सहनशीलता एवं बुद्धिमता से कार्य ले तो इसमें सफलता की आशा की जा सकती है।

चैदज रंपद का वश्य वनचर तथा वैदं का वश्य मानव है। इन दोनों के मध्य नैसर्गिक भिन्नता तथा शत्रुता होने के कारण इनकी अभिरुचियों में अंतर रहेगा। साथ ही मानसिक शारीरिक तथा भावनात्मक स्तर पर भिन्नता रहेगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

चैदज रंपद का वर्ण क्षत्रिय तथा वैदं का वर्ण वैश्य है। अतः चैदज रंपद साहसी एवं पराकामी कार्यों को करने में प्रवृत्त रहेंगे जबकि वैदं की प्रवृत्ति धनार्जन के प्रति रहेगी एवं व्यापारिक बुद्धि से कार्य कलापों को सम्पन्न करके आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करेंगी।

धन

चैदज रंपद एवं वैदं दोनों की तारा 'जनम' है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका शुभ प्रभाव रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। लेकिन इनकी राशियां परस्पर द्वितीय तथा द्वादश भाव में पड़ती है जो एक भकूट दोष माना जाता है। परन्तु मंगल का भी इनकी आर्थिक स्थिति पर शुभ प्रभाव होगा अतः सामान्य रूप से धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेंगे तथा भौतिक सुख साधनों का उपभोग करेंगे।

Pulak Sagarm

T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

भकूट दोष के प्रभाव से च्तेदज रंपद की प्रवृति व्ययशील रहेगी तथा जुआ एवं लाटरी आदि पर समय समय पर अनावश्यक रूप से व्यय करते रहेंगे। यद्यपि आर्थिक स्थिति पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथापि ऐसी प्रवृति की च्तेदज रंपद को यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

स्वास्थ्य

च्तेदज रंपद औरैवदं दोनों एक ही नाड़ी में उत्पन्न हुए हैं। अतः सामान्य दृष्टि से उन्हें नाड़ी दोष होना चाहिए लेकिन वे एक ही नक्षत्र के अलग अलग चरणों में पैदा हुए हैं अतः यह दोष समाप्त हो जाता है परन्तु मंगल का दोनों के स्वास्थ्य पर प्रभाव रहेगा। अतः इसे च्तेदज रंपद औरैवदं गर्मी या पित संबंधी रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। वैवदं को स्त्रीजन्य गुप्त रोगों संभावना रहेगी जबकि च्तेदज रंपद हृदय संबंधी समस्याओं से परेशान रहेंगे। साथ ही संभोग शक्ति की शिथिलता भी दृष्टिगोचर होगी। अतः उपरोक्त दुष्प्रभावों में न्यूनता करने के लिए च्तेदज रंपद औरैवदं दोनों को हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के नियमित उपवास रखने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से च्तेदज रंपद औरैवदं का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त च्तेदज रंपद औरैवदं के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में वैवदं के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन वैवदं को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में वैवदं को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से च्तेदज रंपद औरैवदं सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार च्तेदज रंपद औरैवदं का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

वैवदं के अपनी ससुराल के लोगों से संबंधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का

Pulak Sagarm

T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

सामना करना पड़ेगा तथापि यदि वंद धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से वंद के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी वंद का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी वंद से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

चेंदज रंपद के अपनी सास से मधुर संबध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को चेंदज रंपद अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी चेंदज रंपद के संबधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण चेंदज रंपद के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

Pulak Sagarm

T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com